B.A. Part I / Paper - I / lecture no- 8.

Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor
Marwari college Darbhanga.

Topic → समाजीकरण

जब एक बच्चा जन्म लेता है तो वह एक शारीरिक ढांचा मात्र होता है। न तो वह स्वयं के बारे में जानता है और न ही समाज के बारे में, घर में समाज में उसे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए यह सब सर्वप्रथम उसकी माँ, घर के सदस्यों, रिश्तेदारों, मित्रों से छोटी-छोटी सीखने को मिलता है। सीखने की यह प्रक्रिया को हम समाजीकरण कहते हैं।

जॉनसन ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है "समाजीकरण सीखने की प्रक्रिया है जो सीखने वाले को सामाजिक भूमिकाओं को निभाने योग्य बनाती है।"

किंबाल यंग — "समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रवेश करता है, समाज के विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है। यही प्रक्रिया है माध्यम से उसे समाज के मूल्यों

एवं आनन्द का इच्छाओं की प्रेरणा मिलती है।

समाजीकरण की प्रक्रिया / स्तर
Process of stages of socialization)

1) मौखिक अवस्था (Oral stage) - यह प्रथम स्तर है। इस स्तर पर बच्चा अपनी माँ के अलावे किसी और को नहीं जानता। इस समय बच्चे की उम्र 1 से 1½ वर्ष तक होती है इस उम्र में बच्चा अपने भूख को रुदन कर रोकर अपनी माँ के सम्मुख प्रकट करता है

2) शौचाव अवस्था (Anal stage) - यह अवस्था डेढ़ दो वर्ष से शुरू होकर तीन-चार वर्ष की आयु तक चलती है। इस अवस्था में बच्चे को यह सिखाया जाता है कि उसे कब और कहाँ शौच करना चाहिए तथा हाथ साफ करना, कपड़े गंदे न करना आदि सिखाया जाता है सही गलत में भेद करना सिखाया जाता है जब बच्चा गलती करता है तब उसे डाँट पड़ती है और सही कार्य करने पर प्रोत्साहित या स्नेह किया जाता है

3) तादात्मीकरण की अवस्था (Identification stage) - यह अवस्था 4 वर्ष की आयु से शुरू होकर 12-13 वर्ष की

Scanned by CamScanner

DATE: 3. / /
PAGE:

आयु तक चलती है इस अवस्था में बच्चे से यह आशा की जाती है कि वह लिंग के अनुसार अपने को ढाले तथा पारिवारिक नियमों के अनुसार चले। इस अवस्था में दूसरों के साथ अन्तःक्रिया करते हुए बालक में सहयोग, लगाव, प्रेम, विरोध आदि भावनाओं का विकास होता है।

4) किशोरावस्था (Adolescene Stage) - इस अवस्था में 13-19 वर्ष की उम्र होती है बच्चों के शरीर में कुछ शारीरिक परिवर्तन स्पष्ट होने लगते हैं। बच्चे इस अवस्था में अपने परिवार के सदस्यों के अलावा पड़ोस, स्कूल, मित्र मंडलियों के संपर्क में आने लगता है। बच्चों में यौन संबंधी भावनाएँ भी विकसित होने लगती है इस अवस्था में बच्चों को शिष्टाचार विचारों को व्यक्त करने का ढंग आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

5) वयस्क अवस्था (Adulthood) - इस अवस्था में व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक पर्यावरण तेजी से बदलने लगता है विवाह के कारण व्यक्ति की स्थिति बदलती है एवं सामाजिक दायित्व बढ़ जाता है इस अवस्था में

Scanned by CamScanner

व्यक्ति को पिता, पुत्र, पति, मित्र, अधिकारी कर्मचारी आदि के रूप में अपनी भूमिका निभानी पड़ती है।

6) वृद्धावस्था (Old Age) – इस अवस्था में शारीरिक एवं मानसिक शिथिलता के कारण सामाजिक सम्पर्क बहुत कम हो जाता है। अतः नए विचारों का समावेश नहीं हो पाता। परिवार में नाना या नानी दादा या दादी आदि की स्थिति हो जाती है।

Sumita Kumari
17/4/20.